* के० कृष्ण चन्द्र भट्टाचार्य — दर्शन की अवधारणा, विषय की स्वातंत्र्य कल्पना, मायावाद

- के० सी० भट्टाचार्य का जन्म 12 मई, सन् 1875 को सेरामपुर एवं मृत्यु 11 दिसम्बर, 1949 ई० को हुई थी।
- दर्शन की अवधारणा (Concept of Philosophy)

सामान्यतः दर्शन एक विश्व-दृष्टि देता है। भारत में दर्शन की व्यावहारिक उपयोगिता बतायी गयी है इसका लक्ष्य है मानव को दुःख के बन्धन से मुक्त करना। इस लक्ष्य की प्राप्ति का उपकरण यथार्थ ज्ञान है, और ज्ञान वही यथार्थ कहा जाता है जिसके द्वारा सत्-असत् का भेद स्पष्ट हो। किन्तु के० सी० भट्टाचार्य दर्शन के स्वरूप [illegible] का विचार से सहमत नहीं है उनका कहना है कि दर्शन का कोई [illegible] की संभावना नहीं है। दर्शन का निर्णय तथ्यात्मक होने [illegible] तब सवाल उठता है दर्शन का निर्णय कैसा होता है और उत्तर में भट्टाचार्य - सैद्धांतिक चेतना (Theoretic Consciousness) का विचार प्रतिपादित करते हैं।

भट्टाचार्य के अनुसार विज्ञान के निर्णयों का सम्बन्ध तथ्यों से होता है। उनके अनुसार विज्ञान तथा दर्शन दोनों सैद्धांतिक चेतना की अभिव्यक्ति है। सैद्धांतिक चेतना का [illegible] कथनीय का अवबोध है।

- के० सी० भट्टाचार्य के अनुसार सैद्धांतिक चेतना के चार स्तर है:

(1) आनुभविक स्तर (Empirical) — अनुभविक चेतना का निर्देश सर्वदा 'विषय' की ओर होता है। यह विषय को अन्तःपरक ~~अन्तः~~ की ऐसी आकृति है जिसका या तो प्रत्यक्ष होता है या कल्पना [illegible] लगता है कि प्रत्यक्ष होता है। किन्तु विषय का यह निर्देश ही उस चेतना का अर्थ है। इन्द्रिय-प्रत्यक्ष में ही उसकी आकृति है।

(2) विषयनिष्ठ स्तर (Objective) — आनुभविक चेतना में तथ्य की आकृति इन्द्रिय-प्रत्यक्ष से होती है विचार से नहीं। किन्तु शुद्ध विषयनिष्ठता के स्तर पर यह इन्द्रिय प्रत्यक्ष चेतना के विषय की आकृति का अंग नहीं है। शुद्ध विषयनिष्ठ चेतना में [illegible] तथ्य के रूप में ज्ञात नहीं होता बल्कि आत्म [illegible] विषयनिष्ठता के रूप में जाना जाता है।

(iii) विषयपरक अथवा आध्यात्मिक चेतना (Spiritual Stage)
भट्टाचार्य के अनुसार इस चेतना में 'विषय' की ओर कोई निर्देश नहीं होता। इस चेतना में निहित कोई ऐसी विषयवस्तु नहीं जिसका अवबोध शुद्ध विषयनिष्ठ ढंग से होता है। यहां चेतना के विषयपक्ष की अवगति आत्मनिष्ठता की अभिव्यक्ति में होती है।

(iv) परात्ममूलक चेतना (Transcendental Consciousness)
इस चेतना का निर्देश न विषय की ओर है और न आत्म की ओर। यह चेतना इस भेद से ऊपर उठ जाती है, अतः इस चेतना की विषयवस्तु न 'आत्मा' है न 'विषय' बल्कि इस चेतना की अन्तर्वस्तु है सत्य (Truth)।

- के.सी. भट्टाचार्य 'अर्थ' (Meaning) तथा 'सार्थकता' (Significance) में एक महत्वपूर्ण भेद करते हैं। उनके अनुसार विज्ञान के निर्णयों में अर्थ निहित होता है जबकि दर्शन प्रतीकात्मक विचार है।
- अंत में के.सी. भट्टाचार्य के अनुसार 'दर्शन' के तीन प्रकार हैं —

(i) विषय का दर्शन (Philosophy of the object) जिसका सम्बन्ध 'आत्म-अवस्थित' विषय से है।
(ii) आत्मा का दर्शन (Philosophy of the subject) जिसका सम्बन्ध आत्मा या विषयी से है तथा
(iii) सत्यता का दर्शन (Philosophy of Truth) जिसका सम्बन्ध 'शुद्ध निरपेक्ष सत्' (Absolute) से है।

- के.सी. अपने ज्ञानमीमांसीय सिद्धांत में ज्ञान का आधार 'विश्वास' को मानते हैं।
- उन्होंने निरपेक्ष सत (Absolute) तक पहुँचने के लिए 'निषेध' (Negation) को आधार माना है।